रेज फाइनेंशियल सर्विसेज ने लॉन्च किया ट्रेडिंगचार्ट्स- भारतीय ट्रेडर्स और निवेशकों के लिए नए सिरे से तैयार एआई आधारित चार्टिंग प्लेटफॉर्म

मुंबई, भारत के सबसे तेजी से बढ़ते ट्रेडिंग और इन्वेस्टिंग प्लेटफॉर्म्स में से एक, धन की मूल कंपनी रेज फाइनेंशियल सर्विसेज ने आज ट्रेडिंगचार्ट्स को लॉन्च करने की घोषणा की। यह एक एआई आधारित चार्टिंग प्लेटफॉर्म है, जिसे भारतीय ट्रेडर्स और निवेशकों की जरूरतों को ध्यान में रखकर नए सिरे से तैयार किया गया है। ट्रेडिंगचार्ट्स को पूरी तरह इन-हाउस डिजाइन और विकसित किया गया है। इसे धन के अपने ट्रेडिंग इंजन डेवस्ट और रेज के अपने एआई सिस्टम के साथ गहराई से जोड़ा गया है।

ट्रेडिंगचार्ट्स का मकसद लाखों भारतीय ट्रेडर्स और निवेशकों तक बाजार के विश्लेषण और ट्रेडिंग के आधुनिक टूल्स पहुंचाना है। इसके लिए tradingcharts.co पर एक स्वतंत्र चार्टिंग प्लेटफॉर्म के रूप में उन्नत चार्टिंग सुविधाएं मुफ्त दी जा रही हैं।

यह प्लेटफॉर्म 20 से ज्यादा प्रकार के चार्ट, 200 से ज्यादा मुफ्त इंडिकेटर्स, 8 से ज्यादा चार्ट लेआउट और सेकंड से लेकर दिनों तक के कई टाइमफ्रेम पेश करता है। बाजार के गहन विश्लेषण के लिए इसमें ऑर्डर फ्लो, वॉल्यूम कैंडल्स, वॉल्यूम प्रोफाइल, डेप्थ ऑफ मार्केट और बार रीप्ले जैसे टूल्स भी मौजूद हैं। किसी ब्रोकिंग प्लेटफॉर्म से जुड़ने पर ट्रेडिंगचार्ट्स बिना किसी अलग चार्टिंग सब्सक्रिप्शन के एनएसई, बीएसई और एमसीएक्स के सक्रिय सेगमेंट्स का रियल-टाइम टिक-बाय-टिक मार्केट डेटा दिखाता है। यह ऑप्शंस ट्रेडर्स को स्कैल्पर, पावर स्कैल्पर और मार्केट डेप्थ जैसे फीचर्स के जरिए सीधे ट्रेड करने की सुविधा भी देता है।

धन इस प्लेटफॉर्म को अपने सिस्टम में शामिल करने वाला पहला ब्रोकिंग प्लेटफॉर्म है, और रेज की योजना आने वाले समय में इसे दूसरी ब्रोकरेज कंपनियों और बाजार से जुड़े अन्य पक्षों तक भी पहुंचाने की है। ट्रेडिंगचार्ट्स अब रेज के सभी प्लेटफॉर्म्स पर लाइव है और मुफ्त मिल रहा है। इनमें धन (ऐप और वेब), ऑप्शंस ट्रेडर (ऐप और वेब), डेस्कटॉप टी3 ट्रेडिंग टर्मिनल, स्कैलएक्स और हाल ही में लॉन्च हुआ इन्वेस्टिंग ऐप प्लेटिनयम्स शामिल हैं।

रेज फाइनेंशियल सर्विसेज के संस्थापक और सीईओ प्रवीण जाधव ने कहा, एक ट्रेडर के लिए सब कुछ चार्ट से ही शुरू होता है- आइडिया, एंट्री, पोजीशन, एग्जिट, यानी ट्रेडिंग का पूरा सफर चार्ट स्क्रीन पर ही चलता है। पिछले पांच वर्षों में धन ने चार्ट में कई ऐसे फीचर्स पेश किए हैं, जो इंडस्ट्री में पहली बार आए। इनमें चार्ट से सीधे ट्रेडिंग, ड्रैग एंड ड्रॉप पोजीशन, स्कैल्पर्स, भारत के हिसाब से खास टाइम-फ्रेम, बार रीप्ले और कई दूसरे फीचर्स शामिल हैं, जो आज इंडस्ट्री के मानक बन चुके हैं। फिर भी कई बार हम ट्रेडर्स के सुझाव लागू नहीं कर पाते थे, क्योंकि वे समाधान थर्ड-पार्टी लाइब्रेरी पर बने थे, जिन पर हमारा नियंत्रण सीमित था।

उन्होंने आगे कहा, हमारे पास हमेशा से अपनी तकनीक और इंफ्रास्ट्रक्चर स्टैक रहा है, और अब ट्रेडिंगचार्ट्स के साथ हमारे पास अपना चार्टिंग समाधान भी है। भारत के पास अब एक ऐसा चार्टिंग प्लेटफॉर्म है, जो यहीं बना है, भारतीय बाजार के डेटा पर आधारित है और भारतीय ट्रेडर्स की जरूरतों के हिसाब से तैयार किया गया है। हम इसे मुफ्त दे रहे हैं, क्योंकि भारत का हर ट्रेडर बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के विश्व-स्तरीय बाजार विश्लेषण और ट्रेडिंग टूल्स का हकदार है।

मारुति सुजुकी का दो दिवसीय ग्रामीण मेगा इवेंट सफलतापूर्वक आयोजित, बड़ी संख्या में उमड़े ग्राहक, मेगा इवेंट में हुई बड़ी खरीददारी

भीनमाल (माणकमल भंडारी)। स्थानीय कृष्णा ऑटो सेल्स प्रा. लि. की ओर से मारुति सुजुकी एरीना एवं नेक्सा का दो दिवसीय ग्रामीण मेगा इवेंट उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। मीडिया प्रभारी माणकमल भंडारी ने बताया कि इस विशेष आयोजन में शहर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में ग्राहकों, गणमान्य नागरिकों, जनप्रतिनिधियों एवं वाहन खरीदने के इच्छुक लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप पूर्व पालिकाध्यक्ष प्रेमराज लोहरा, सरपंच गोविंद खिलेरी भागल भीम, सरपंच घेवाराम निम्बोडा, महेन्द्र सरपंच दासपा, पार्षद महादेवाराम घांची, पार्षद मुस्ताकअली, पार्षद हकीमखान, पूर्व पार्षद जयंतीलाल घांची, नागरिक कल्याण मंच के अध्यक्ष माणकमल भंडारी सहित स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य अतिथियों ने शिरकत की। इसके साथ ही स्थानीय पत्रकारों, व्यापारियों एवं क्षेत्र के प्रबुद्ध नागरिकों की भी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के दौरान मारुति सुजुकी के विभिन्न लोकप्रिय कार मॉडलों के बारे में ग्राहकों को विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही वाहनों की विशेषताओं, आधुनिक तकनीक, सुरक्षा सुविधाओं, फाइनेंस एवं ग्राहकों की जरूरतों के अनुरूप उपलब्ध विकल्पों से अवगत करवाया गया। इवेंट के दौरान ग्राहकों ने वाहनों में विशेष रुचि दिखाई तथा बड़ी संख्या में पूछताछ एवं बुकिंग प्राप्त हुई। दो दिवसीय आयोजन में कुल 85 ग्राहक पूछताछ हेतु आये, 7 वाहनों की बुकिंग की गई, 13 रिप्लेसमेंट बायर्स एवं 3 फिजिकल एक्सचेंज वाहन दर्ज किए गए। ग्रैंड विटारा, विक्टोरिस, स्विफ्ट, बलेनो एवं ऑल्टो जैसे लोकप्रिय मॉडलों में ग्राहकों ने विशेष रुचि दिखाई।



इस सफल आयोजन में क्लस्टर मैनेजर इमरान शेख के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में स्थानीय सेल्स टीम ने सराहनीय प्रदर्शन किया। विजनेस हेड वायस प्रेसिडेंट देवानन्द लोहिया, जनरल मैनेजर विजेंद्र शर्मा, शो रूम मैनेजर जालोर लोकेश सोलंकी, माजिद खान सहित कई लोगों ने टीम के बेहतर समन्वय, योजनाबद्ध कार्यशैली एवं मेहनत ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के ग्राहकों तक मारुति सुजुकी की आधुनिक वाहन श्रृंखला एवं बेहतर ग्राहक सेवाओं को पहुंचाना तथा ग्राहकों के साथ मजबूत एवं विश्वसनीय संबंध स्थापित करना रहा। आयोजकों ने कार्यक्रम में आये अतिथियों, जनप्रतिनिधियों, ग्राहकों, व्यापारियों एवं क्षेत्रवासियों का आभार व्यक्त करते हुए सभी अतिथियों को सम्मानित भी किया। साथ ही कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी लोगों, मीडिया टीम एवं मारुति सुजुकी टीम के सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया। क्लस्टर मैनेजर इमरान शेख एवं कृष्णा ऑटो सेल्स प्रा. लि. की पूरी टीम ने भविष्य में भी इसी प्रकार ग्राहकों को बेहतर सेवाएं एवं उत्कृष्ट खरीदारी अनुभव प्रदान करने का संकल्प व्यक्त किया।

आदित्य बिरला हाउसिंग फाइनेंस ने मध्य प्रदेश में अपना विस्तार करते हुए बड़वानी में नई शाखा शुरू की

बड़वानी, आदित्य बिरला कैपिटल लिमिटेड की सहायक कंपनी और अग्रणी हाउसिंग फाइनेंस कंपनी, आदित्य बिरला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड ने मध्य प्रदेश में अपनी उपस्थिति का विस्तार करते हुए बड़वानी में नई शाखा शुरू की है।

यह पहल देशभर में अपने वितरण नेटवर्क के विस्तार की कंपनी की व्यापक योजना का हिस्सा है। इस नई शाखा के साथ मध्य प्रदेश में ABHFL की कुल शाखाओं की संख्या बढ़कर 28 हो गई है। इससे तेजी से विकसित हो रहे बाजारों में कंपनी की उपस्थिति मजबूत होगी और ग्राहकों के लिए सेवाओं की पहुंच और बेहतर होगी।

बड़वानी में आवास की मांग लगातार बढ़ रही है। इसका प्रमुख कारण लोगों में अपना घर खरीदने की बढ़ती आकांक्षा, स्थानीय व्यवसायों का विस्तार और नए आवासीय क्षेत्रों का विकास है। दक्षिण-पश्चिमी मध्य प्रदेश के एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक केंद्र के रूप में बड़वानी में व्यापारियों, छोटे व्यवसायियों, वेतनभोगी व्यक्तियों और स्वरोजगार से जुड़े ग्राहकों की अच्छी संख्या है, जिन्हें घर खरीदने, निर्माण कराने और नवीनीकरण के लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती है। कृषि और व्यापार आधारित अर्थव्यवस्था भी अपने घरों में निवेश करने और उन्हें बेहतर बनाने की इच्छुक परिवारों की मांग को बढ़ावा देती है। नई शाखा के माध्यम से ABHFL का उद्देश्य हाउसिंग फाइनेंस को अधिक सुलभ बनाना और स्थानीय ग्राहकों के लिए घर खरीदने के अवसरों को उनके और करीब लाना है।

ABHFL विभिन्न ग्राहक वर्गों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए हाउसिंग फाइनेंस समाधानों की व्यापक श्रृंखला उपलब्ध कराती है। इसमें किफायती आवास ऋण, प्राइम हाउसिंग, निर्माण वित्त और प्रॉपर्टी के बदले लोन शामिल हैं। ये सुविधाएं वेतनभोगी व्यक्तियों, स्वरोजगार करने वाले पेशेवरों, गैर-पेशेवर स्वरोजगार करने वाले व्यक्तियों और उभरते आय वर्ग के ग्राहकों के लिए उपलब्ध हैं। एक मजबूत डिजिटल इकोसिस्टम के सहयोग से ABHFL आसान ऑनबोर्डिंग, तेज लोन स्वीकृति और बेहतर पारदर्शिता सुनिश्चित करती है, जिससे ग्राहकों को बेहतर अनुभव मिलता है।

नई शाखा के शुभारंभ के अवसर पर ABHFL शून्य लॉगिन शुल्क के साथ ?50 लाख तक के तत्काल लोन स्वीकृति की सुविधा प्रदान कर रही है। यह विशेष ऑफर 26 नवंबर से 31 दिसंबर, 2026 तक मान्य रहेगा। इसके माध्यम से ग्राहकों को अधिक तेज और किफायती दरों पर ऋण सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा।

इस विस्तार पर टिप्पणी करते हुए, आदित्य बिरला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के एमडी एवं सीईओ, श्री पंकज गाडगिल ने कहा, मध्य प्रदेश हमारे लिए विकास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण बाजार है। यहां मजबूत मांग और लोगों की बढ़ती आकांक्षाओं को देखते हुए हम ग्राहकों के साथ अपने जुड़ाव को और मजबूत बनाने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर अपनी उपस्थिति का विस्तार कर रहे हैं। अपने बढ़ते वितरण नेटवर्क और मजबूत डिजिटल क्षमताओं के संयोजन के माध्यम से हमारा उद्देश्य ग्राहकों के लिए घर खरीदने की पूरी प्रक्रिया को अधिक सरल, तेज और परेशानी मुक्त बनाना है।

'हैप्पी होम लोन जर्नी' के अपने वादे के अनुरूप यह विस्तार ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण, जिम्मेदार ऋण वितरण और विविध एवं व्यापक रिटेल पोर्टफोलियो के माध्यम से वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के प्रति ,ब्रांड की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है?

अस्वीकरण- ऋण प्रदान करना पूरी तरह से आदित्य बिरला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के विवेकाधिकार पर निर्भर है तथा यह लागू नियमों और शर्तों के अधीन है।

सर्दियों में त्वचा की देखभाल, रूखी और बेजान त्वचा से ऐसे पाएं छुटकारा

अपनी त्वचा को प्यार दें, क्योंकि हर मौसम में खूबसूरत दिखने का हक आपका भी है!

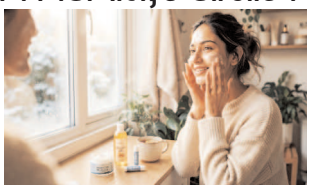

सर्दियों का मौसम अपने साथ सुहाना अहसास और ठंडी हवाएं लेकर आता है, लेकिन यह मौसम हमारी त्वचा के लिए एक बड़ी चुनौती बन जाता है। ठंडी हवा और कम नमी के कारण त्वचा की ऊपरी परत से नमी छिन जाती है, जिससे त्वचा रूखी, बेजान, खिंची-खिंची और कई बार पपड़ीदार हो जाती है।

अगर आप भी इस सर्दियों में अपनी त्वचा को मुलायम, चमकदार और स्वस्थ रखना चाहते हैं, तो इन आसान और असरदार टिप्स को अपनी दिनचर्या में जरूर शामिल करें,

गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें, बहुत गर्म पानी से बचें

सर्दियों में बहुत गर्म पानी से नहाना या चेहरा धोना किसे अच्छा नहीं लगता, लेकिन यह त्वचा के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है। अत्यधिक गर्म पानी त्वचा के प्राकृतिक तेल को पूरी तरह छीन लेता है, जिससे त्वचा और अधिक रूखी हो जाती है।

हमेशा गुनगुने पानी का ही इस्तेमाल करें। नहाने या चेहरा धोने के तुरंत बाद त्वचा पर मॉइश्चराइज़र लगाएं।

सही मॉइश्चराइज़र और ऑयल का चुनाव,

सर्दियों में गर्मियों वाले हल्के लोशन काम नहीं आते। इस मौसम में त्वचा को गहरे पोषण की जरूरत होती है।मॉइश्चराइज़र का इस्तेमाल करें।

नहाने के तुरंत बाद जब त्वचा थोड़ी गीली हो, तब बादाम का तेल, नारियल का तेल या ऑलिव ऑयल (जैतून का तेल) से हल्की मालिश करें। यह नमी को त्वचा के अंदर लॉक कर देता है।

चेहरे के साथ-साथ हमारे हाथ और होंठ भी सर्दियों में सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं।

होठों की त्वचा बहुत पतली होती है। फटे होठों से बचने के लिए अच्छी क्वालिटी का लिप बाम या शुद्ध घी/मलाई दिन में कई बार लगाएं। हफ्ते में एक बार हल्के हाथों से स्क्रब जरूर करें।बार-बार हाथ धोने से ये रूखे हो जाते हैं। इसलिए पास में हैंड क्रीम रखें और रात को सोने से पहले पैरों में पेट्रोलियम जेली लगाकर मोजे पहनकर सोएं।

सर्दियों में हमें प्यास कम लगती है, जिसके कारण हम पानी पीना बहुत कम कर देते हैं। शरीर में पानी की कमी होने से त्वचा अंदर से बेजान होने लगती है।

दिनभर में कम से कम 8 से 10 गिलास पानी जरूर पिएं। आप चाहें तो गुनगुना पानी, हर्बल टी, ग्रीन टी या नींबू पानी भी पी सकते हैं।

खूबसूरत और स्वस्थ त्वचा के लिए बाहरी देखभाल के साथ-साथ अंदरूनी पोषण भी उतना ही जरूरी है।

फलों और सब्जियों का सेवन,ताजे फल (संतरा, अनार, अमरूद) और हरी पत्तेदार सब्जियां खाएं। इनमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिंस त्वचा में चमक लाते हैं।इड़ी फरूट्स,बादाम, अखरोट और अलसी के बीज में हेल्दी फैट्स और ओमेगा-3 फैटी एसिड होते हैं, जो त्वचा को अंदर से नमी प्रदान करते हैं।

सर्दियों की मीठी धूप सेंकना बहुत अच्छा लगता है, लेकिन धूप की यूवी किरणें त्वचा को नुकसान पहुँचा सकती हैं और उसे समय से पहले बूढ़ा बना सकती हैं।



सर्दियों में त्वचा की देखभाल के लिए किसी महंगे ट्रीटमेंट की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि ज़रूरत होती है सही आदतों और नियमितता की। अगर आप ऊपर दिए गए छोटे-छोटे बदलावों को अपनी जीवनशैली में अपना लें, तो आपकी त्वचा इस कड़ाके की ठंड में भी खिली-खिली, स्वस्थ और बेदाग बनी रहेगी।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़ हरदा मध्य प्रदेश



मुफ्त दवा योजना मरीजों के लिए बनी मृग मरीचिका

स्वास्थ्य सेवाएं किसी सरकार की कृपा नहीं, नागरिकों के जीवन और सम्मान से जुड़ी सार्वजनिक जिम्मेदारी हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर सरकारों के दावे और अस्पतालों में मरीजों की वास्तविक स्थिति के बीच अक्सर एक लंबी दूरी दिखाई देती है। राजस्थान के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल सवाई मानसिंह (एसएमएस) अस्पताल, जयपुर से आई दवाइयों की कमी की खबर इसी दूरी को उजागर करती है।

जिस अस्पताल में प्रदेश के कोने-कोने से गरीब, मध्यमवर्गीय और गंभीर बीमारियों से पीड़ित लोग बेहतर उपचार की उम्मीद लेकर आते हैं, वहां यदि जरूरी दवाइयां उपलब्ध नहीं हैं और मरीजों को बाहर के मेडिकल स्टोर से उन्हें खरीदना पड़ रहा है, तो यह महज प्रशासनिक अव्यवस्था नहीं, बल्कि सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था के प्रति गंभीर चेतावनी है।अस्पताल में हृदय रोग, मधुमेह, मानसिक रोग, त्वचा रोग और संक्रमण सहित अनेक बीमारियों के उपचार में काम आने वाली दवाइयां अनुपलब्ध हैंइनमें एस्पिरिन, वारफारिन, मेटफॉर्मिन, लिनाग्लिप्टिन, रिसपेरीडोन, लिथियम कार्बोनेट, मोक्सीफ्लोक्सासिन और अन्य दवाइयां शामिल हैं। डॉक्टरों द्वारा लिखी गई दवाइयां जब अस्पताल के काउंटर पर नहीं मिलतीं, तब मरीज को कभी दूसरे काउंटर पर भेजा जाता है तो कभी बाहर से खरीदने की सलाह दी जाती है। नियमित उपचार कराने वाले मरीजों के लिए यह स्थिति और भी कष्टकारी है।

यहां एक बुनियादी सवाल उठता है कि जिस मरीज ने सरकारी अस्पताल का रुख इसलिए किया कि उसे कम खर्च में उपचार मिल सके, वह यदि दवाइयों के लिए निजी मेडिकल स्टोर के चक्कर लगाए तो मुफ्त इलाज की अवधारणा का व्यावहारिक अर्थ क्या रह जाता है? राजस्थान में निःशुल्क दवा योजना आम नागरिक को राहत देने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। बाद में इसे मुख्यमंत्री निःशुल्क निरोगी राजस्थान योजना के रूप में व्यापक स्वरूप दिया गया। इसका उद्देश्य सरकारी अस्पतालों में आने वाले मरीजों को आवश्यक दवाइयां निःशुल्क उपलब्ध कराना है। यह पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई एक महत्वपूर्ण जनकल्याणकारी पहल है। मरीज के हाथ में डॉक्टर की लिखी दवा नहीं पहुंचती तो योजना का वास्तविक उद्देश्य अधूरा ही रहता है।

राज्य सरकार के आर्थिक समीक्षा दस्तावेज 2025-26 के अनुसार दिसंबर 2025 तक निःशुल्क दवा योजना से 15.73 करोड़ मरीजों को लाभ मिलने और 1,312.19 करोड़ रुपये व्यय होने का उल्लेख है। ये आंकड़े योजना के बड़े विस्तार को दर्शाते हैं,लेकिन मरीजों की संख्या और खर्च का आंकड़ा यह प्रमाणित नहीं करता कि प्रत्येक अस्पताल में प्रत्येक जरूरी दवा समय पर उपलब्ध है। लाभार्थियों की संख्या के साथ दवाइयों की उपलब्धता का स्वतंत्र मूल्यांकन भी जरूरी है।

राजस्थान की स्वास्थ्य व्यवस्था पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (ग्रत) की निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट ने भी कई गंभीर कमियां उजागर की हैं। स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित इस रिपोर्ट में 2016 से 2022 तक की अवधि की जांच की गई। रिपोर्ट 2025 में विधानसभा में प्रस्तुत हुईरिपोर्ट में नमूना जांच किए गए सरकारी चिकित्सा संस्थानों और जिला औषधि भंडारों में आवश्यक दवाओं की कमी पाई गई। अस्पतालों को उनकी मांग से कम दवाइयां जारी होने, दर अनुबंधों को अंतिम रूप देने में देरी और निर्धारित सुरक्षित भंडार स्तर से काफी नीचे पहुंचने के बाद खरीद आदेश दिए जाने जैसी समस्याएं सामने आईं। प्रयोगशालाओं से दवाइयों की गुणवत्ता जांच रिपोर्ट मिलने में देरी भी आपूर्ति बाधित होने का एक कारण बताई गई।

सरकारी अस्पताल में आने वाले अधिकांश मरीज मध्यवित्त परिवारों के होते हैं। बहुत से मरीज दूरदराज के गांवों और कस्बों से किराया खर्च करके जयपुर पहुंचते हैं। उनके साथ आने वाले परिजन भी कई बार रोज कमाने-खाने वाले होते हैं। ऐसे परिवार के लिए बाहर से पांच सौ या हजार रुपये की दवा खरीदना भी भारी पड़ सकता है। यदि बीमारी हृदय या मधुमेह जैसी है और दवाइयां नियमित रूप से लेनी हैं तो यह खर्च हर महीने की आर्थिक परेशानी बन जाता है। दवा न मिलना केवल आर्थिक बोझ नहीं बढ़ाता, बल्कि उपचार की निरंतरता भी प्रभावित कर सकता है। विशेष रूप से हृदय रोग, मधुमेह और मानसिक रोगों में नियमित दवा सेवन का महत्व है। मरीज यदि पैसे के अभाव में दवा खरीद नहीं पाता तो उसकी बीमारी गंभीर हो सकती है। इस तरह अस्पताल में दवा की अनुपलब्धता अंततः मरीज के स्वास्थ्य के लिए भी जोखिम बन जाती है।

एसएमएस अस्पताल प्रदेश का प्रमुख चिकित्सा संस्थान है। यदि यहां दवाइयों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में कठिनाई आ रही है तो जिला अस्पतालों, उप जिला अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति की समीक्षा और भी आवश्यक हो जाती है। यह मान लेना उचित नहीं होगा कि पूरे प्रदेश में स्थिति एक जैसी है, लेकिन राजधानी के सबसे बड़े अस्पताल की खबर निश्चित रूप से व्यापक जांच की मांग करती है।असली कसौटी यह है कि किसी ग्रामीण मरीज को अपने नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर डॉक्टर, जांच और जरूरी दवा मिल रही है या नहीं। यदि उसे सामान्य दवा के लिए भी जिला मुख्यालय या राजधानी की ओर भागना पड़ता है तो स्वास्थ्य सेवाओं के विकेंद्रीकरण का उद्देश्य पूरा नहीं हुआ।

सरकार अपने तीन वर्षों की उपलब्धियों का जश्न मनाने जा रही है। विकास के दावों और उपलब्धियों का सार्वजनिक मूल्यांकन लोकतंत्र का सामान्य हिस्सा है, लेकिन स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील क्षेत्र में उपलब्धियों का आकलन प्रचार से नहीं, मरीज के अनुभव से होना चाहिए।यदि सरकारी अस्पताल में डॉक्टर दवा लिखता है और उसी अस्पताल का दवा काउंटर उसे उपलब्ध कराने में असमर्थ रहता है, तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि योजना और क्रियान्वयन के बीच तालमेल कहां टूट रहा है? सरकार को यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि दवाइयों की कमी किन कारणों से हुई, कितने समय से बनी हुई है और इसे दूर करने की समयबद्ध कार्ययोजना क्या है। योजनाओं के नाम बदलने, नई घोषणाएं करने और उपलब्धियों के विज्ञापन से अस्पताल की अलमारी में दवाइयां नहीं पहुंचतीं। उसके लिए प्रशासनिक इच्छाशक्ति, वित्तीय प्रबंधन और जवाबदेही की जरूरत होती है। इस संकट का समाधान केवल अतिरिक्त बजट घोषित करने से नहीं होगा। इसके लिए दवा खरीद से लेकर मरीज तक पहुंचने की पूरी व्यवस्था को दुरुस्त करना होगा।

इसके लिए जरूरी है कि प्रत्येक सरकारी अस्पताल और औषधि भंडार में दवाइयों के स्टॉक की ऑनलाइन निगरानी हो। कौन-सी दवा कितनी उपलब्ध है, कितनी मांग बढ़ रही है और किसकी आपूर्ति बाधित है। जीवनरक्षक और नियमित उपयोग की दवाइयों का निश्चित बफर स्टॉक रखा जाए। स्टॉक एक निर्धारित सीमा पर पहुंचते ही खरीद प्रक्रिया स्वतः शुरू हो खरीद में अनावश्यक देरी के लिए जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाए। अस्पताल में हेल्प डेस्क, टोल फ्री नंबर और ऑनलाइन शिकायत व्यवस्था हो। शिकायत का निस्तारण समय सीमा में किया जाए।सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था का उद्देश्य केवल मरीज का पंजीकरण करना या उसे डॉक्टर तक पहुंचाना नहीं है। उपचार तब पूरा होता है जब मरीज को आवश्यक जांच, चिकित्सकीय परामर्श और निर्धारित दवाइयां उपलब्ध हों। इनमें से कोई एक कड़ी कमजोर पड़ती है तो पूरी व्यवस्था प्रभावित होती है।

स्वास्थ्य सेवाएं किसी सरकार की कृपा नहीं, नागरिकों के जीवन और सम्मान से जुड़ी सार्वजनिक जिम्मेदारी सरकार यदि वास्तव में निःशुल्क इलाज को अपनी उपलब्धि मानती है तो उसे एक सरल सवाल का जवाब देना होगा– क्या सरकारी अस्पताल में डॉक्टर द्वारा लिखी गई जरूरी दवा मरीज को उसी अस्पताल में मुफ्त मिल रही है?मुफ्त इलाज की घोषणा तभी सार्थक होगी, जब मरीज को दवा खरीदने के लिए अपनी जेब नहीं टटोलनी पड़े।

–नफीस आफरीदी, स्वतंत्र पत्रकार, बी-70, प्रगति पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 मो. 93515 97376

कांगड़ा के लोक संगीत का विस्तृत अध्ययन

साहित्य ,संगीत ,योग और समाज सेवा हेतु समर्पित डॉक्टर ईंदु बाला द्वारा लिखित प्रथम पुस्तक लोक संगीत पाठकों के रूबरू है लेखिका ने पुस्तक को पांच अध्यायोंमें बांटा है पहला अध्याय है सांस्कृतिक पृष्ठभूमि। इसके अंतर्गत कांगड़ा शब्द की व्युत्पत्ति एवं ऐतिहासिक नामकरण, द्वितीय अध्याय में लोक संगीत का सैद्धांतिक विवेचन और तीसरे अध्याय में लोक संगीतिक गायन शैलियों का विश्लेषण और अंतिम पंचम अध्याय में लोक वाद्य , नृत्य और नाट्य आदि को शामिल किया गया है पुस्तक के अध्ययन से यह पता लगता है कि डॉक्टर ईंदु बाला ने कांगड़ा की लोक संगीत शैलियों का गहन अध्ययन एवं शोध करके विद्वान पाठकों के समक्ष पुस्तक को रखा है पुस्तक निश्चित तौर पर संगीत वादन, गायन और कांगड़ा क्षेत्र के मूल संगीत के प्रति पाठकों और श्रोताओं में रूचि पैदा करेगी पुस्तक की भूमिका में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉक्टर गौतम शर्मा व्यथित ने विस्तृत तौर लिखा है वर्तमान संक्रमण काल है भारतीय संस्कृति की भांति यहां का लोक संगीत, लोक गायन, लोक वार्ता लोक वाद्या संगीत सब संक्रमण से प्रभावित हो रहा है इस समय आवश्यकता है कि हम



लुप्त होती जा रही इस धरोहर का संरक्षण करके अपना सार्थक योगदान दें ।प्रो.इंदु बाला द्वारा रचित पुस्तक लोक संगीत इस दृष्टि से बहुत सार्थक प्रतीत होती है । लेखिका अपनी पुस्तक में कांगड़ा का भूगोलीय इतिहास, यहां की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ,यहां की प्रकृति ,यहां की बोली, यहां का लोक साहित्य, यहां की लोक संस्कृति ,यहां का लोक जीवन जिसमें यहां का खान-पान, परिधान,कौन-कौन सा आवास ,जाति एवं व्यवसाय, धर्म, मंदिर एवं मान्यताएं, पर्व आदि को समाहित किया है। लेखिका ने संगीतक शैलियों के शब्द अर्थ पर्यायवाची शब्द गायन की शैलियां भी प्रस्तुत की है यहां धर्मिक गीत ,शृंगार गीत, ऋतु गीत,वीर गीत और खेल गीत भी शामिल किए गए हैं । लेखिका ने कांगड़ा क्षेत्र में प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न लोक वाद्यों ,नृत्य एवं नाट्य शैलियों का भी वर्णन किया है इस प्रकार शोध की दृष्टि से पुस्तक का महत्व और भी बढ़ जाता है। सांस्कृतिक विरासत को सहेजती इस उत्कृष्ट कृति के सृजन हेतु डॉ इंदु बाला बधाई की हकदार हैं।

समीक्षक : डॉ.धर्मपाल साहिल होशियारपुर पंजाब (9876156964)